राजा राधिकारमण प्रसाद सिंह की रचनाओं में नारी विमर्श

डॉ0 सुरेन्द्र सिंह, यादव

राजा साहब ने ईमानदारी से नारी की अत्यन्त व्यापकता को देखते हुए उसके मूल्य का निर्धारण किया है। राजा साहब ने अपने विपुल साहित्य में नारी के विभिन्न रूपों को अत्यन्त सजीव एवं यथार्थ रूप में हिन्दी–पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। जहाँ "राम–रहीम" जिसकी तुलना अँग्रेजी के थेकरे के "बैतिटीफेयर" से की जाती है, की बेला जीवन में करूणा और धर्म में आस्था का नियोजन कर सतत संवेदनशील बनी रहती है, वही बिजली सतत लालसा सक्त नारी का रूप उपस्थित करती है तथा नारी के घृणात्मक पहलू से पाठकों को मिला देती है।राजा साहब ने अपने साहित्य में शरत की तरह नारी को हृदय प्रधान स्वींकार किया है। "नारी का सर्वस्व हृदय है, विवेक नहीं। उसके जीवन की सार्थकता प्रेम है, संयम नहीं। उन्होनें नारी चरित्रों की गहराई से परख करते हुए उसके विविध नैसर्गिक गुणो ं का भी उद्घाटन किया है।